कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

48556

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

प्रवेशिका परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) --

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में --

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [ ] अंग्रेजी [✓]

विषय .... संस्कृत व्याकरण

परीक्षा का दिन...

दिनांक ...

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दण्डित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14			
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ....संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

Previous Pathshala

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	1.	अवसान संज्ञा
	2.	औङः आपः
	3.	ईकारान्तउकारान्तश्च वाच्यं यत् स्त्रीत्वं विकल्पेन नदी संज्ञकौ भवतः।
	4.	"शि सर्वनामस्थानम्"
	5.	यः सौ
	6.	इदम् शब्दस्य यः इद तस्य दकारस्य स्थाने यकारादेशः भवति।
	7.	अजाद्यतष्टाप्
	8.	'ऊङ्' प्रत्ययः
	9.	वयं प्रातर् जागरणीयम्।
	10.	वदति
	11.	'टाङसिङसामिनात्स्याः

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	12.	सर्वनाम स्थाने परे स्त्रीत्व विवक्षायां 'घाट्' आगमः भवति उदाहरणम् => रमायाम्
	13.	नपुंसकाच्च => नपुंसकात् अङ्गात् परस्य औ स्थाने 'शी' आदेशः भवति।
	14.	होढः
	15.	नहो धः => नह शब्दस्य यः हकार तस्य स्थाने धकारादेशः भवति। झलि परे पदान्ते। उदाहरणम् => उपानत् - उपानद्
	16.	अहन् शब्दस्य नकारस्य स्थाने 'रु' आदेशो भवति।
	17.	अन्तरेण => विना नाना => बहुप्रकाराः / भिन्ने-भिन्ने
	18.	पुरा => प्राचीनकाले ~~[illegible]~~ => ~~[illegible]~~ चेत् => अनवृक्तालिप्तौ
	19.	

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पु.	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पु.	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पु.	अस्मि	स्वः	स्मः

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

~~19.~~

	~~एकवचनम्~~	~~द्विवचनम्~~	~~बहुवचनम्~~
~~प्रथम पुरुष~~	~~भवति~~	~~भवतः~~	~~भवन्ति~~
~~मध्यम पुरुष~~	~~भवसि~~	~~भवथः~~	~~भवथ~~
~~उत्तम पुरुष~~	~~भवामि~~	~~भवावः~~	~~भवामः~~

20.

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष	वदतु	वदताम्	वदन्तु

21. सर्वादीनि सर्वनामानि ⇒ सर्वादीनि शब्दस्वरूपाणि सर्वनाम संज्ञानि स्युः। सर्व आदि शब्दानां 'सर्वादीनि सर्वनामानि' अनेन सूत्रेण सर्वनाम संज्ञा भवति।

उदाहरणम् ⇒ सर्वः, सर्वस्मै।

~~22.~~ 'सर्व' शब्दात ~~अर्थवद्~~ "अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्" इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां "सर्वादीनि सर्वनामानि" इति सूत्रेण सर्वनाम संज्ञायां 'स्वौजसमौट्' इति सूत्रेण विभक्ति कृते।

~~22.~~ ~~रमया~~ ⇒ ~~रमा इति शब्दात "अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्" इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां "स्वौजसमौट्छष्टा-भ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप्" इति सूत्रेण तृतीयैकवचने टा विभक्तौ रमा + टा इति जाते 'चुटू' इति सूत्रेण टकारस्य इत्संज्ञा: 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोप~~

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

~~कृते रमा + आ इत्यवस्थायाँ "याडापः" इति सूत्रेण याट् आगमे कृते 'रमा + याट् + आ' इति जाते "हलन्त्यम्" इति सूत्रेण टकारस्य इत्संज्ञा "तस्यलोपः" इत्यनेन लोप कृते 'रमा + या + आ' इति स्थितौ "अकः सवर्णे दीर्घः" इति सूत्रेण दीर्घ कृते~~

(सर्वादीनिसर्व०)

2(iv) सर्वस्याः => सर्वा इति शब्दात् 'अर्थवत् अधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्" इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां "स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस् ङे भ्याम्भ्यस् ङसि भ्याम्भ्यस् ङसोसाम् ङ्योस्सुप्" इत्यनेन ङसि / ङस् प्रत्यय कृते सर्वा + ङसि / ङस् इति जाते "लशक्वतद्धिते" इति सूत्रेण ङस्य इत्संज्ञा तस्य लोपः इत्यनेन लोप कृते एवञ्च 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' इत्यनेन इकारस्य इत्संज्ञायां तस्य लोपः इत्यनेन लोप कृते सर्वा + अस इत्यवस्थायां "सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च" इत्यनेन आबन्त अङ्गस्य ह्रस्व एवञ्च स्याट् आगमे कृते सर्व + स्याट् + अस इत्यवस्थायाँ अनुबन्ध लोपे सर्वस्या + अस इति जाते ~~प्रथमयो~~ "प्रथमयोः पूर्वसवर्णः" इति सूत्रेण पूर्वसवर्णी दीर्घ कृते सर्वस्यास इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सस्य रुत्वे अनुबन्ध लोपे सर्वस्या र् इति जाते "विरामोऽवसानम्" इति सूत्रेण अवसान संज्ञायां "खरवसानयोर्विसर्जनीयः" इत्यनेन रेफस्य विसर्ग कृते "सर्वस्याः" इति रूपं सिद्धम् ।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी द्वारा

२. स्त्रियः => स्त्री इति शब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां 'स्वौजसमौट्' इत्यादिना सूत्रेण ङस् प्रत्यय कृते स्त्री + ङस् इति जाते लशक्वतद्धिते इति सूत्रेण ङस्य इत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोप कृते 'स्त्री + अस्' 'स्त्रियाः' इति सूत्रेण इयङ् आदेशे अनुबन्ध लोपे च कृते 'स्त्रिय् + अस्' वर्ण मिलित्वा 'स्त्रियस्' इत्यवस्थायां ससजुषो रुः इत्यनेन रुत्वे अनुबन्ध लोपे स्त्रियर् इति जाते 'विरामोऽवसानम्' अवसानसंज्ञायां 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्ग कृते स्त्रियः इति रूपं सिद्धम्।

२३. ४. ज्ञानेन => ज्ञान शब्दात् "कृत्तद्धितसमासाश्च" इतिसूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां 'स्वौजसमौट्' इत्यादिना सूत्रेण तृतीयैकवचने टा प्रत्यये कृते ज्ञान + टा इत्यवस्थायां 'चुटू' इति सूत्रेण टकारस्य इत्संज्ञा तस्य लोपः इत्यनेन लोप कृते ज्ञान + आ इति जाते 'यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्" इति सूत्रेण अङ्ग संज्ञा कृते 'टाङसिङसामिनात्स्याः' इति सूत्रेण टा (आ) स्थाने इन आदेशे कृते ज्ञान + इन इत्यवस्थायां 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे कृते ज्ञानेन इति रूपं सिद्धम्।

५. वारिणी => वारि इति शब्दात् "अर्थवत अधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्" इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां 'स्वौजसमौट्' इत्यादिना सूत्रेण प्रथमा द्विवचने औ प्रत्यये कृते वारि + औ इति जाते '~~नपुंसकस्य झलचः~~' इति सूत्रेण नुम् आगमे अनुबन्ध लोपे कृते [वारिन् + औ इत्यवस्थायां 'नपुंसकाच्च' इति सूत्रेण औ स्थाने शी आदेशे कृते वारिन् + शी इति जाते 'लशक्वतद्धिते' → [इकोऽचि विभक्तौ]

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

इति सूत्रेण शकारस्य इत्संज्ञा: 'तस्य लोप:' इत्यनेन लोप कृते 'वारिन् + ई' इति स्थितौ वर्णं मिलित्वा 'वारिनी' इत्यवस्थायां 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इति सूत्रेण नस्य णत्वे कृते 'वारिणी' इति रूपं सिद्धम्।

25(1.) उपानत् ⇒ उपानह् इति शब्दात् "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां "स्वौजसमौट्" इत्यादिना सूत्रेण प्रथमैकवचने सु प्रत्यये उपानह् + सु इति जाते 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' इति सूत्रेण उकारस्य इत्संज्ञा, 'तस्य लोप:' इत्यनेन लोप कृते उपानह् + स् इति स्थितौ 'नहो धः' इति सूत्रेण हकारस्य स्थाने धकार कृते उपानध् + स् इत्यवस्थायां 'झलां जशोऽन्ते' इति सूत्रेण धकारस्य स्थाने जशत्वे दकार कृते उपानद् + स् इति जाते 'अपृक्त एकाल् प्रत्ययः' इत्यनेन अपृक्त संज्ञायां 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' इति सूत्रेण सस्य लोप कृते ~~उपानत्~~ उपानद् इत्यवस्थायां '~~खरि च~~ (वाऽवसाने)' इत्यनेन दकारस्य स्थाने तं कृते उपानत्। चर्त्वाभावे उपानद् इति रूपं सिद्धम्।

(2.) चतस्रः ⇒ चतुर् शब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्" इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां 'स्वौजसमौट्" इत्यादिना सूत्रेण जस् प्रत्यये कृते चतुर् + जस् इति जाते 'चुटू' इति सूत्रेण जकारस्य इत्संज्ञा, तस्य लोप: इत्यनेन लोप कृते चतुर् + अस् इति जाते 'सुडनपुंसकस्य' इति सूत्रेण सर्वनाम स्थान

Previous Pathshala

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

संज्ञायां 'चतुरनडुहोरामुदात्तः' इति सूत्रेण आम् आगमः प्राप्ते तस्य निषेधे कृते 'त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ' इति सूत्रेण चतुर् शब्दस्य स्थाने चतसृ आदेशे कृते चतसृ + अस् इत्यवस्थायां 'इकोयणचि' इति सूत्रेण यणि कृते चतसर + अस् इति जाते र वर्ण मिलित्वा चतस्र + स् इति स्थितौ 'ससजुषोरुः' इत्यनेन सस्य रुत्वे अनुबन्ध लोपे चतस्र + र इति स्थितौ 'विरामोऽवसानम्' इति सूत्रेण अवसानसंज्ञायां 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इति सूत्रेण रेफस्य विसर्ग कृते 'चतस्रः' इति रूपं सिद्धम् ।

25.
1. बाला ⇒ बाल इति शब्दात् प्रातिपदिकात् 'अजाद्यतष्टाप्' इति सूत्रेण टाप् प्रत्यये कृते बाल + टाप् इति जाते 'हलन्त्यम्' इति सूत्रेण पकारस्य इत्संज्ञा 'चुटू' इति सूत्रेण टकारस्य इत्संज्ञा 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोप कृते बाल + आ इत्यवस्थायां 'अकः सवर्णे दीर्घः' इति सूत्रेण सवर्ण दीर्घ कृते बाला इति जाते 'स्वौजसमौट्' इति सूत्रेण प्रथमैकवचने सु प्रत्यय कृते बाला + सु इति स्थितौ 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' इति सूत्रेण उकारस्य इत्संज्ञा 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोप कृते बाला + स् इत्यवस्थायां 'अपृक्त एकाल् प्रत्ययः' इति सूत्रेण अपृक्त संज्ञायां 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' इति सूत्रेण सस्य लोपे बाला इति रूपं सिद्धम् ।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

2. <u>नर्तकी</u> => नर्तक इति शब्दात् 'अर्थवत् अधातुर प्रत्ययः' इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां 'टिड्ढाणञ् द्वय-सज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः' इति सूत्रेण ङीप् प्रत्यये कृते नर्तक + ङीप 'हलन्त्यम्' इति सूत्रेण पकारस्य इत्संज्ञा: 'लशक्वतद्धिते' इति सूत्रेण ङस्य इत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोप कृते नर्तक + ई इति जाते 'यचिभम्' इत्यनेन् भसंज्ञायां 'यस्येति च' इति सूत्रेण अकारस्य लोप कृते नर्तक + ई इत्यवस्थायां वर्ण मिलित्वा नर्तकी इति जाते 'स्वौजसमौट्' इत्यादिना सूत्रेण प्रथमैकवचने सु प्रत्यय कृते नर्तकी + सु अनुबन्ध लोपे नर्तकी + स इत्यवस्थायां 'अपृक्त एकाल् प्रत्ययः' इति सूत्रेण अपृक्त संज्ञायां 'हल्ङ्याब्भ्योदीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्" इति सूत्रेण सस्य लोपे 'नर्तकी' इति रूपं सिद्धम्।

26. <u>पुंयोगादाख्याम्</u> => पुंवाचकम् यः नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्दः तस्मात् ङीष् प्रत्यय भवति।

यः शब्दः पुल्लिङ्गस्य स्त्रीलिङ्गे प्रयुक्तो: तस्मात् शब्दात् 'पुंयोगादाख्याम्' इति सूत्रेण पुंवद् भावे ङीष् प्रत्ययः भवति।

<u>यथा</u> => गोपी

गोप इति शब्दात् प्रातिपदिकात् 'पुंयोगादाख्याम्' इति सूत्रेण ङीष् प्रत्यये कृते गोप + ङीष इत्यवस्थायां अनुबन्ध लोपे गोप + ई इति जाते 'यचि भम्' इति सूत्रेण भसंज्ञायां 'यस्येति च' इति सूत्रेण अकारस्य लोप कृते गोप् + ई इत्यवस्थायां वर्ण सम्मेलनेन <u>गोपी</u> इति जाते।

BSER-16.3/2018

Previous Pathshala

परीक्षार्थी उत्तर

27. दादेर्धातोर्घः => दादेर्धातोर्हस्य घः स्यात् झलि परे पदान्ते।

दादि धातूनां हकारस्य स्थाने घकारं स्यात्। अनेन सूत्रेण दादि धातूनां हकारस्य स्थाने घकारः झलवर्णानां परे पदान्ते।

यथा => धुक् - धुग्

दुह् इति शब्दात कृत्तद्धितसमासाश्च इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां 'स्वौजसमौट्' इत्यादिना सूत्रेण सु प्रत्यये कृते दुह् + सु इत्यवस्थायां अनुबन्ध लोपे दुह् + स इति स्थितौ (दादेर्धातोर्घः इति सूत्रेण हकारस्य स्थाने घ कृते दुघ् +स इति जाते 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' इत्यनेन द स्थाने ध कृते धुघ् +स 'झलां जशोऽन्ते' इति सूत्रेण घ् स्थाने ग् कृते धुग् + सकारस्य लोप कृते 'वाऽवसाने' चर्त्वे कृते धुक् - चर्त्वाभावे धुग् इति रूपं सिद्धम्।

28.(1) कानि => किम् शब्दात 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः' इतिसूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां 'स्वौजसमौट्' इत्यादिना सूत्रेण जस् प्रत्यये किम् + जस् 'किमः कः' इति सूत्रेण किम् स्थाने क आदेशे कृते क + जस् 'चुटू' इतिसूत्रेण जकारस्य इत्संज्ञा तस्य लोपः इत्यनेन लोप कृते क + अस् इति स्थितौ 'षट् चतुर्भ्यश्च' इतिसूत्रेण नुम् आगमे अनुबन्ध लोपे कन् + अस् इति जाते 'सान्त महतः संयोगस्य' इति सूत्रेण उपधाया दीर्घ कृते कान् + अस् '(जश्शसोः शिः)' इति सूत्रेण जसः स्थाने शी आदेशे कृते अनुबन्ध लोपे कान् + इ वर्ण सम्मेलनेन कानि इति रूपं सिद्धम्।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

2\. एते => एतत् इति शब्दात् 'अर्थवदधातुर०' इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां 'स्वौजसमौट्' इत्यादिना सूत्रेण औ प्रत्यये एतत् + औ इत्यवस्थायां 'यस्मात्प्रत्यय विधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्' इति सूत्रेण अङ्ग संज्ञायाम् अनुबन्ध लोपे 'नपुंसकाच्च' इति सूत्रेण औ स्थाने शी आदेशे कृते एत + शी इत्यवस्थायां 'लशक्व तद्धिते' इति सूत्रेण शकारस्य इत्संज्ञा 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोप कृते एत + ई इति जाते आद्गुणः इत्यनेन गुणे कृते एते इति रूपं सिद्धम्।

29(1.) रामान् => राम इति शब्दात् 'अर्थवदधातुर०' इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां 'स्वौजसमौट्०' इत्यादिना सूत्रेण शस् प्रत्यये कृते राम + शस् अनुबन्ध लोपे राम + अस् इति जाते 'हलन्त्यम्' इति सूत्रेण सकारस्य इत्संज्ञा प्राप्ता: 'न विभक्तौ तुस्माः' इति सूत्रेण निषेधे कृते राम + अस् इत्यवस्थायां 'प्रथमयो पूर्वसवर्णः' इति सूत्रेण पूर्वसवर्ण दीर्घ कृते 'रामास्' इति जाते 'तस्माच्छसो नः पुंसि' इति सूत्रेण सकारस्य स्थाने नकार कृते 'रामान्' इत्यवस्थायां 'अट्कुप्वाङ्नुम्०' इति सूत्रेण नस्य णत्वे प्राप्ते 'पदान्तस्य' इति सूत्रेण तस्य निषेधे कृते रामान् इति रूपं सिद्धम्।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

२. सर्वस्मै => सर्व इति शब्दात् 'अर्थवदधातुरः' इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां 'सर्वादीनि सर्वनामानि' इति सूत्रेण सर्वनाम संज्ञायां 'स्वौजसमौट्' इत्यादिना सूत्रेण चतुर्थ्येकवचने ङे विभक्तौ सर्व + ङे इत्यवस्थायां 'लशक्व तद्धिते' इति सूत्रेण ङस्य इत्संज्ञायां तस्य लोपः इत्यनेन लोप कृते सर्व + ए इति जाते 'सर्वनाम्नः स्मै' इति सूत्रेण ङे (ए) स्थाने 'स्मै' आदेशे कृते सर्वस्मै इति रूपं सिद्धम्।

३. हरिः => हरि इति शब्दात् 'अर्थवद धातुर' इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां 'स्वौजसमौट्' इत्यादिना सूत्रेण सु प्रत्यये कृते हरि + सु इति जाते 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' इति सूत्रेण उकारस्य इत्संज्ञा, तस्य लोपः इत्यनेन लोप कृते हरि + स् इत्यवस्थायां सस्य रुत्वे विसर्गे कृते हरिः इति रूपं सिद्धम्।

४. सखा => सखि इति शब्दात् 'अर्थवदधातुरः' इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां 'स्वौजसमौट्' इति सूत्रेण सु प्रत्यये कृते सखि + सु अनुबन्ध लोपे 'सखि + स्' इत्यवस्थायां 'यस्मात्प्रत्यय विधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्' इति सूत्रेण अङ्ग संज्ञायां 'ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसाञ्च' इति सूत्रेण अनङ् आदेशे अनुबन्ध लोपे च कृते सखन् + स् इति स्थिते 'सर्वनाम स्थाने चासम्बुद्धौ' इति सूत्रेण उपधाया दीर्घ कृते सखान् + स् इत्यवस्थायां 'नलोप प्रातिपदिकान्तस्य' इति सूत्रेण नकारस्य लोप कृते 'अपृक्त एकाल् प्रत्ययः' इति सूत्रेण अपृक्त संज्ञायां 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सकारस्य लोप कृते सखा इति रूपं सिद्धम्।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

30. लिट् => लिह् इति शब्दात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इति सूत्रेण प्रातिपदिकसंज्ञायां 'स्वौजसमौट्' इत्यादिना सूत्रेण सु प्रत्यये कृते लिह् + सु इति जाते अनुबन्ध लोपे लिह् + स इत्यवस्थायां 'हो ढः' इति सूत्रेण हकारस्य स्थाने ढकारे कृते लिढ् + स इति स्थितौ 'झलां जशोऽन्ते' इति सूत्रेण जशत्वे डकारे कृते लिड् + स इति जाते 'अपृक्त एकाल् प्रत्ययः' इति सूत्रेण अपृक्त संज्ञायां 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' इति सूत्रेण सस्य लोपे कृते लिड् इति जाते 'वाऽवसाने' इति सूत्रेण विकल्पेन चर्त्वे कृते लिट् एवञ्च चर्त्वाभावे लिड् इति रूपं सिद्धम्।

2. राजा => राजन् इति शब्दात् 'अर्थवदधातुर्' इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां 'स्वौजसमौट्' इत्यादिना सूत्रेण सु प्रत्यये कृते राजन् + सु अनुबन्ध लोपे राजन् + स इति जाते 'सान्तमहतः संयोगस्य' इति सूत्रेण उपधाया दीर्घ कृते राजान् + स इति स्थितौ 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इति सूत्रेण नकारस्य लोप कृते राजा + स इत्यवस्थायां "हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्" इति सूत्रेण सकारस्य लोप कृते राजा इति रूपं सिद्धम्।

Previous Pathshala

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

3. वृत्रघ्नः => वृत्रहन् इति शब्दात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां 'स्वौजसमौट' इत्यादिना सूत्रेण 'शस्' प्रत्यये कृते वृत्रहन् + शस् इति जाते 'लशक्वतद्धिते' इति सूत्रेण शकारस्य इत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे कृते वृत्रहन् + अस् इति जाते 'अतोलोपः' इत्यनेन अलोपे वृत्रह्न् + अस् इत्यवस्थायां 'चोःकुः' इति सूत्रेण चवर्गस्य कुत्व घकारे कृते वृत्रघ्न+अस् इत्यवस्थायां सस्यरुत्वे विसर्गे च कृते वृत्रघ्नः इति रूपं सिद्धम्।

4. युष्माकम् => युष्मद् इति शब्दात् "अर्थवदधातुर०" इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायां 'स्वौजसमौट०' इति सूत्रेण षष्ठी बहुवचने आम् प्रत्यये कृते युष्मद् +आम् इति जाते 'साम आकम्' इति सूत्रेण आम् स्थाने आकम् आगम कृते युष्मद् + आकम् इति स्थितौ 'शेषे लोपः' इत्यनेन टि (अद्) लोपे कृते युष्म् +आकम् इत्यवस्थायां वर्णसम्मेलनेन 'युष्माकम्' इति रूपं सिद्धम्।

"समाप्त"

Previous Pathshala